Contents

Index

TITLE	Page(s)
Electronic Resources: Its Types And Importance to Research in India - **Rama Joshi**	**02**
Research and Ouality Higher Education: Where We Stand - **Dr. Sabita Mishra, Dr. Shivpal Singh**	**18**
Physical exercise role in Type1 Diabetes: Care - **Dr.Bimlendu Kumar Roy**	**30**
Relevance of Religion based in Mahatma Gandhi's philosophical thoughts - **Dr.Suja George Stanley**	**44**
सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन – **डा0 राहुल गुप्ता**	**55**

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
Vol: 7, ISSUE: 1, No: 25 July – September, 2021

‘‘सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।’’

डा0 राहुल गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर
दीवान ग्रुप ऑफ इंस्टीट्युशन्स मेरठ

सारांश :

कुशल शिक्षक की आवश्यकता केवल नवीन शिक्षा प्रणाली के विकास और निर्माण में ही नहीं है बल्कि वह अपने अध्ययन कक्ष में बैठ कर भी अपने प्रान्त और राष्ट्र की सीमाओं को लांघकर समस्त विश्व के क्रियाकलापों एवं गतिविधियों का अध्ययन कर उसकी समीक्षा करता है।अध्यापन न तो कोई व्यवसाय है अथवा विविध जानकारियां प्राप्त करा देने जैसा साधारण कार्य, बल्कि शिक्षा और शिक्षक के महत्व को किसी क्षुद्र दायरे में सीमित कर देना न केवल अनुचित है बल्कि समाज के लिये हानिप्रद भी। वास्तव में आज के समाज में शिक्षक बहुत ही उपेक्षित व्यक्ति है। उपरोक्त स्थितियों के चलते अध्यापकों की स्थिति इतनी अव्यवस्थित हो जाती है कि वह गहरे तनाव और मानसिक थकान से भर जाते है। ऐसे में अध्यापक अध्यापिकाओं द्वारा अपने व्यवसाय में मजबूरी के चलते बने तो रहना पडता है परन्तु वह विद्यार्थियों को अच्छा परिणाम पाने हेतु अपनी बेहतर क्षमताओं को प्रयुक्त नहीं कर पाता। चूकि अध्यापक किसी भी देश के भाग्य निर्माता होते है अतः हमें यह सोचना होगा कि हम अपने बालकों के भविष्य के निर्माण हेतु अध्यापकों की स्थिति में किस प्रकार से बदलाव लाना होगा ताकि उन्हें मानसिक अवसाद की स्थिति से उबारकर एक स्वस्थ वातावरण प्रदान किया जा सके।व्यवसायिक सन्तुष्टि प्रत्येक कर्मचारी की एक ऐसी वैयक्तिक और सांवेगिक अनुभूति होती है जिसके सभी आयामों और जटिलताओं को सरलता से नहीं समझा जा सकता। वर्तमान परिवेश की परिवर्तित परिस्थितियों में व्यवसायिक सन्तुष्टि का संबंध कार्यकर्त्ता की समायोजनात्मकता से लिया जाता है प्रत्येक कर्मचारी यह जानता है कि वह अपने कार्य से तब तक संतुष्ट नहीं रह सकता जब तक कि कर्मचारी अथवा अध्यापक अपने समूह अथवा संस्था के साथ समुचित रूप से समायोजित न हो। यह भी एक सोचनीय बात है कि हमारे समाज में शिक्षण व्यवसाय को आर्थिक दृष्टिकोण से सम्मानजनक दर्जा प्राप्त नहीं है। ऐसे अनेंको कारण हैं जिससे कारण मेधावी एवं कुशल व्यक्तियों को इस व्यवसाय में आना पसन्द नहीं है। अध्यापक अपने इस व्यवसाय में रूचि लेकर व संतुष्ट होकर कार्य कर सकें, इसी जिज्ञासा के साथ शोधार्थी ने प्रस्तुत विषय पर कार्य करने की आवश्कता महसूस की है और अपने इस अध्ययन के माध्यम से पाया है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है।माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शहरी शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की

निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है।

भूमिका :

किसी भी देश की प्रगति का भार वहां की शिक्षित जनता पर निर्भर करता है। देश की जनता जितनी शिक्षित होगी वह देश विश्व में उतनी ही प्रगति करेगा। भारत वर्ष में शिक्षा को देश की जनता का जन्म सिद्ध अधिकार घोषित किया गया है तथा इसकी जिम्मेदारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय को सौंपी गयी है। यदि शिक्षा के इतिहास पर गौर किया जाए तो यह विस्तृत रूप में जाति या वर्ण प्रणाली के उच्चतम छोर के व्यक्तियों तक विशेषाधिकार के रूप में मानी जाती थी। हमारे देश का इतिहास शिक्षा देने में जाति, वर्ग एवं लिंग पर आधारित भेदभावों से भरा हुआ है। वैदिक काल को देखें तो शिक्षा को पुरोहितों के एकमात्र विशेषाधिकार के रूप में देखा जाता है। निम्न जाति के लोग विशेष रूप से शिक्षा प्राप्त करने से वर्जित थे। प्रारम्भिक वैदिक काल में शिक्षा सभी को प्राप्त नहीं होती थी परन्तु उत्तर वैदिक काल में यह सभी की पहुँच में थी। बौद्धों ने शिक्षा को आठवीं शताब्दी ई0 पू0 के अन्त तक आश्रमों की परिधि से बाहर लाने का प्रयास अवश्य किया। मध्यकाल में मुस्लिम शासकों ने भी शिक्षा पर राज्य के कार्यरूप में विचार नहीं किया तथा इसे धर्म की शाखा के रूप में समझा गया। यद्यपि अनेकों विद्वान आधुनिक शिक्षा की नींव के लिए ब्रिटिश नीति की सराहना करते हैं, जबकि यह कोई परोपकारी कार्य नहीं था। किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली अधिकांशतः उस देश के शिक्षकों की गुणात्मकता पर निर्भर करती है, और शिक्षक को ही सम्पूर्ण शिक्षा प्रकिया की धुरी माना जाता है। शिक्षकों के निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी ज्ञानार्जन की सही दिशा का अनुसरण नहीं कर सकता है। एक कुशल अध्यापक किसी भी राष्ट्र को, प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में अत्यन्त सहायक होता है। कुशल शिक्षक की आवश्यकता केवल नवीन शिक्षा प्रणाली के विकास और निर्माण में ही नहीं है बल्कि वह अपने अध्ययन कक्ष में बैठ कर भी अपने प्रान्त और राष्ट्र की सीमाओं को लांघकर समस्त विश्व के कियाकलापों एवं गतिविधियों का अध्ययन कर उसकी समीक्षा करता है। वह देश के भावी नागरिकों को देश में आने वाली सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का सामना करने के लिये तैयार करता है, इस दृष्टि से वह समस्त मानव समाज की उन्नति एवं प्रगति का द्योतक होता है।हमारी प्रचलित शिक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में वास्तविकता यह है कि हमारे देश में शिक्षा का वर्तमान ढांचा सामान्यतः प्रशासनिक, न्यायिक और आर्थिक ढांचों की भांति अंग्रेजों का ही बनाया हुआ है। वास्तविकता यह है कि शिक्षा को अति प्राथमिकता का क्षेत्र मानते हुए भी संसाधनों का आवंटन करते समय या कोई नीति निर्धारण के समय उसे उपयुक्त प्राथमिकता प्रदान नहीं की जाती।

हमारे देश में सरकारी विद्यालयों की दशा भी अत्यन्त सोचनीय है और अधिकांशतः हमारे इन विद्यालयों में सिर्फ वे ही छात्र प्रवेश पाते है जो अत्यन्त निर्धन है। हमारे देश के सरकारी विद्यालयों में असुविधाओं के चलते निजी विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। इन विद्यालयों में छात्र शिक्षक अनुपात का संतुलित न होना, विषयवार शिक्षकों का पर्याप्त संख्या में न होना, पुस्तकालयों में पुस्तकों की संख्या निर्धारित मात्रा में न होना, आदि जैसे अनेंको कारण हैं जो कि मानकों के अनुरूप नहीं हैं

जबकि शिक्षक एवं शिक्षा को एक दूसरे के पूरक के रूप में देखा जाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य व्यवहार परिवर्तन करना होता है और शिक्षक इस व्यवहार परिवर्तन का प्रमुख स्रोत माना जाता है। वह अपने ज्ञान एवं अनुभवों के आधार पर बालक का सर्वांगीण विकास करता है और समाज में संस्कारों एवं मूल्यों की स्थापना करता है। जिस पर सम्पूर्ण समाज अपनी प्रगति की नींव रखता है। यह तथ्य सर्वमान्य है कि शिक्षक ही समाज में मूल्यों के संरक्षण के साथ अनुकूल वातावरण के निर्माण में सहायक होता है। शिक्षक अपने ज्ञान, मार्गदर्शन एवं व्यक्तित्व के द्वारा बालक एवं समाज में मानवता बोध एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास कर सकता है। वास्तव में किसी भी समाज में अध्यापक का अपना विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान होता है। पुरानी एवं नयी पीढी के मध्य वह न केवल सेतु का कार्य करता है वरन् आने वाली पीढी को कल का नेतृत्व संभालने और उसके गंभीर उत्तरदायित्वों को संभालने का कार्य भी अध्यापक को ही करना पडता है। अध्यापन न तो कोई व्यवसाय है न ही कोई बच्चों को अक्षरज्ञान, अथवा विविध जानकारियां प्राप्त करा देने जैसा साधारण कार्य, बल्कि शिक्षा और शिक्षक के महत्व को किसी क्षुद्र दायरे में सीमित कर देना न केवल अनुचित है बल्कि समाज के लिये हानिप्रद भी। वास्तव में आज के समाज में शिक्षक बहुत ही उपेक्षित व्यक्ति है। आज अध्यापकों को अपना महत्व व दायित्व समझना होगा। साथ ही समाज का भी कर्त्तव्य है कि वह शिक्षक को समुचित सम्मान और प्रतिष्ठा दे। यदि हम निजी विद्यालयों की बात करें तो ऐसे विद्यालयों में अध्यापक की स्थिति बहुत ही ज्यादा तनाव और दबाव में रहती है एक और तो बच्चों के अभिभावक उनसे अपेक्षा रखतें हैं और दूसरी और इन शिक्षण संस्थानों के प्रबंधक अच्छा परिणाम लाने का दबाव निरन्तर बनाये रखते है।

उपरोक्त स्थितियों के चलते अध्यापकों की स्थिति इतनी अव्यवस्थित हो जाती है कि वह गहरे तनाव और मानसिक थकान से भर जाते है। ऐसे में अध्यापक अध्यापिकाओं द्वारा अपने व्यवसाय में मजबूरी के चलते बने तो रहना पडता है परन्तु वह विद्यार्थियों को अच्छा परिणाम पाने हेतु अपनी बेहतर क्षमताओं को प्रयुक्त नहीं कर पाता। एक और परीक्षा परिणाम का दबाव और दूसरी तरफ माता पिता की शिकायतों का निवारण करना अध्यापक को मानसिक रूप से थका देता है। उपरोक्त स्थितियों के चलते एक शिक्षक से यह आशा नहीं की जा सकती कि एक अध्यापक बच्चों को भविष्य की वह नीव देगा जिस पर उसके व्यक्तित्व की इमारत खडी होगी। चूकि अध्यापक किसी भी देश के भाग्य निर्माता होते है अतः हमें यह सोचना होगा कि हम अपने बालकों के भविष्य के निर्माण हेतु अध्यापकों की स्थिति में किस प्रकार से बदलाव लाना होगा ताकि उन्हें मानसिक अवसाद की स्थिति से उबारकर एक स्वस्थ वातावरण प्रदान किया जा सके। व्यवसायिक सन्तुष्टि से अभिप्राय किसी कर्मचारी द्वारा उसके कार्य के प्रति निर्मित्त सामान्य अभिवृत्ति से लगाया जाता है। इसका अनुमान इस आधार पर भी लगाया जा सकता है कि कोई कर्मचारी अपने कार्य परिवेश से पुरस्कार की जो प्रत्याशा करता है और वस्तुतः जितना प्राप्त होता है दोनों में कितना अन्तर है। व्यवसायिक सन्तुष्टि का आशय इस बात से लिया जाता है कि व्यक्ति अपने कार्य परिवेश से समग्र रूप में किस सीमा तक संतुष्ट है। अतः व्यवसायिक सन्तुष्टि एक दृष्टिकोण है जो अपने कार्य सम्बन्धी पसंदगी तथा नापसंदगी के योग तथा संतुलन से उत्पन्न होता है। अध्यापक, शिक्षा की धुरी है यह सर्वविदित है। अध्यापक का कर्तव्य पवित्र एवं महान माना जाता है शिक्षा के प्रसार का उत्तरदायित्व शिक्षक पर ही निर्भर है। एक

शिक्षक अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूर्ण मनोयोग, तन्मन्यता और तत्परता से करता है। व्यवसायिक सन्तुष्टि एक प्रकार की अभिप्रेरणा है, जिसके फलस्वरूप कार्यकर्त्ता अपना कार्य सम्पादित करने में असीम आनन्द की अनुभूति करता है। यह संतोष वैयक्तिक स्तर पर अनुभूत किया जाता है और किसी भी रूप में इसकी व्याख्या सामूहिक संदर्भ में नहीं की जा सकती। किसी भी कार्य की मात्रा एवं गुणवत्ता में तभी वृद्धि हो सकती है जबकि कर्मचारी अपने कार्य से संतुष्ट हो। व्यवसायिक सन्तुष्टि प्रत्येक कर्मचारी की एक ऐसी वैयक्तिक और सांवेगिक अनुभूति होती है जिसके सभी आयामों और जटिलताओं को सरलता से नहीं समझा जा सकता। कोई भी कर्मचारी अपने कार्य से कैसा सुख चाहता है यह अंशतः इस बात पर निर्भर करता है कि स्वयं के बारे में उसकी धारणा क्या है? दूसरे शब्दों में यह कर्मचारी की आत्म प्रतिष्ठा का भाव है जो कि कुछ कर्मचारियों में अधिक होता है और कुछ में कम। आत्म प्रतिष्ठा वाले कर्मचारी अपनी कार्य सफलता से ज्यादा प्रसन्न होते है। जबकि निम्न प्रतिष्ठा भाव वाले कर्मचारियों में यह बात नहीं होती। अनेंको अध्ययनों से यह बात भी सामने आयी है कि पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियां अपने व्यवसायों से ज्यादा संतुष्ट रहती है। व्यवसायिक सन्तुष्टि का एक प्रधान कारण व्यक्तित्व को भी माना गया है। और यदि हम मानसिक क्रियाओं की बात करें तो मानसिक प्रक्रियाओं का मूल्यांकन व्यक्तित्व के अध्ययन के बिना अधूरा रहता है। जो व्यक्ति व्यवहार में असामान्य होते है और जिनका व्यक्तित्व मनस्तापीय प्रकार का होता है वे अपने से और अपने कार्य से असंतुष्ट रहते हैं। वर्तमान परिवेश की परिवर्तित परिस्थितियों में व्यवसायिक सन्तुष्टि का संबंध कार्यकर्त्ता की समायोजनात्मकता से लिया जाता है प्रत्येक कर्मचारी यह जानता है कि वह अपने कार्य से तब तक संतुष्ट नहीं रह सकता जब तक कि कर्मचारी अथवा अध्यापक अपने समूह अथवा संस्था के साथ समुचित रूप से समायोजित न हो।

भारत के भाग्य का निर्माण इस समय कक्षाओं में हो रहा है। हमारे विद्यालयों से निकलने वाले विद्यार्थियों की संख्या पर ही राष्ट्रीय पुननिर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी, जिसका प्रमुख लक्ष्य हमारे रहन सहन का स्तर ऊँचा उठाना है। शिक्षक की संतुष्टि व असंतुष्टि का प्रभाव अचेतन रूप से बालकों के मस्तिष्क पर पडता है। ऐसा कहा गया है कि 'यथा गुरू तथा शिष्य'। मुदालियर कमीशन ने कहा था कि हमे इस सत्य की दुखद अनुभूति है कि शिक्षक की सामाजिक स्थिति, वेतनमान, सेवाकालीन परिस्थितियां अत्यन्त असंतोषप्रद हैं। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक के महत्व पर प्रकाश डालते हुये कहा गया है कि सुविचारित शैक्षिक पुननिर्माण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक शिक्षक है। दूसरे शब्दों में शिक्षक के व्यक्तित्व गुण उसकी शैक्षिक योग्यता, उसका व्यवहारिक प्रशिक्षण तथा विद्यालय और समाज में उसका स्थान ये सब महत्वपूर्ण कारक है। विद्यालय की प्रतिष्ठा कैसी है और सामुदायिक जीवन पर उसका प्रभाव कैसा पड रहा है यह दोनों बाते इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय में कार्यरत शिक्षक किस प्रकार के है। व्यक्ति का व्यवसाय उसके लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। व्यक्ति अपनी जाग्रत अवस्था का आधे से अधिक समय अपने व्यवसाय में व्यतीत करता है। व्यवसाय के कारण ही व्यक्ति एक विशिष्ट समूह में विचरण करता है, वास्तव में देखा जाये तो व्यवसाय व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करता है। कुछ व्यक्तियों के लिये उनका व्यवसाय संतोषप्रद एवं प्रसन्नचित्त रहने का माध्यम रहता है। जबकि कुछ व्यक्तियों को अपने व्यवसाय से अरूचि होती है। व्यक्ति अपने व्यवसाय में खुश नहीं रहता, जैसे अध्यापन व्यवसाय। किसी भी राष्ट्र

के सामाजिक, वैज्ञानिक, तकनीकी एवं आर्थिक विकास में अध्यापकों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। इसके अतिरिक्त राष्ट्र की समृद्धि उसके नागरिकों की समृद्धि एवं सम्पन्नता से जुडी होती है, तथा नागरिकों की समृद्धि, स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं सांस्कृतिक गतिशीलता से मानी जाती है। वर्तमान में देश की जनसंख्या का एक बडा भाग किशोरों का है, जो माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त कर रहे है। छात्रों के चरित्र निर्माण का दायित्व चूंकि अध्यापकों द्वारा निभाया जा रहा है, तो ऐसी स्थिति में यह भी संभव है कि अध्यापकों को अपने कार्य के उत्तरदायित्व को समझना होगा। और चूंकि अध्यापकों का यह कार्य आवश्यक है अतः यह आवश्यक होगा कि उनमें अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि हो, उन्हें अच्छा वेतन मिले, उनकी सेवायें सुरक्षित हों और कार्य की परिस्थितियां संतोषजनक हों। ताकि वे अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह समुचित रूप से कर सकें। लेकिन दुर्भाग्य से हमें ऐसी स्थिति नजर नहीं आती। अध्यापकों की संख्या अपर्याप्त है, समाज में अध्यापकों को उचित सम्मान नहीं मिल रहा है। और अध्यापन व्यवसाय को व्यक्तियों द्वारा अंतिम विकल्प के रूप में चुना जाता है। सामान्यतः लोग तभी अध्यापक बनते हैं जब उन्हें कोई इच्छित व्यवसाय नहीं मिल पाता। यह भी एक सोचनीय बात है कि हमारे समाज में शिक्षण व्यवसाय को आर्थिक दृष्टिकोण से सम्मानजनक दर्जा प्राप्त नहीं है। ऐसे अनेंको कारण हैं जिससे कारण मेधावी एवं कुशल व्यक्तियों को इस व्यवसाय में आना पसन्द नहीं है। अध्यापक अपने इस व्यवसाय में रूचि लेकर व संतुष्ट होकर कार्य कर सकें, इसी जिज्ञासा के साथ शोधार्थी ने प्रस्तुत विषय पर कार्य करने की आवश्कता महसूस की है।

अध्ययन के उददेश्य :

1. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् शहरी महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
4. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् शहरी पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना :

1. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण पुरूष व शहरी पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

साहित्य की समीक्षाः

01. शर्मा, भावना एवं संगीता (2019) ने''शिक्षा के मौलिक अधिकार के प्रति शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकओं की जागरूकता का अध्ययन'' पर अध्ययन किया। उद्देश्य के रूप में 78 शिक्षक–शिक्षिकाओं की जागरूकता का अध्ययन किया गया वनिष्कर्ष में पाया कि शासकीय विद्यालयों में शिक्षिकाओं की जागरूकता शिक्षको की अपेक्षा ज्यादा पाई गई परन्तु शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में शिक्षक व शिक्षिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

02. पतरा व स्वाति (2019) ने''अवेयरसेस ऑफ स्कूल टीचर्स अवाउट द राइट टू एजुकेशन '' पर अध्ययन किया व उद्देश्य के रूप में राजकीय तथा अवासीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना था निष्कर्ष में इन्होनें पाया कि राजकीय विद्यालयों के शिक्षक आवासीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षा अधिकार के प्रति अधिक जागरूक हैं।

03. डे, निराधर व विनोद (2018) ने ''द राइट ऑफ चिल्ड्रन टू फ्री एण्ड कम्पलसरी एज्यूकेशन एक्ट 2009ः टीचर्स परसेप्सन पर अध्ययन किया। अध्ययन के उदेश्य शिक्षको की शिक्षा के अधिकार के प्रति राय व जागरूकता का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि युवा अध्यापकों में वरिष्ठ अध्यापकों की अपेक्षा अधिक जागरूकता थी तथा अधिकार के प्रति अध्यापको की राय के निष्कर्ष में पाया गया कि अधिकतर अध्यापक प्रवेश परीक्षा तथा अनुर्त्तीण करने की प्रणाली को समाप्त करने के पक्ष में नहीं थे।।

04. सोनी, मंजू (2017) ने ''शिक्षा के अधिकार के प्रति अध्यापकों व अभिभावकों का प्रत्यक्षीकरण एक अध्ययन एक अध्ययन किया। उदेश्य के रूप में शिक्षा के अधिकार के प्रति राजकीय एव निजी उच्च प्राथमिक विघालयों में अध्यापक करने वाले शिक्षकों का प्रत्यक्षीकरण देखना था। निष्कर्ष में इन्होनें पाया कि शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति राजकीय विद्यालयों के अध्यापक निजी विद्यालयो के अध्यापकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण रखते हैं।

05. मुदिता शर्मा (2016) ने ''एसिएमेन्ट ऑफ दे इम्पलीमेटेशन ऑफ राइट टू एज्यकेशन आर0टी0ई0 इन द एलिमेट्री स्कूल ऑफ वेस्टर्न यूपी'' पर अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य पश्चिमी यूपी के सरकारी व प्राइवेट प्राथमिक स्कूलों में आर0टी0ई0 कानून के कार्यान्वयन का आंकलन करना था। निष्कर्ष मे इन्होनेंपाया कि सरकारी स्कूल के शिक्षक आर0टी0ई0 2009 के लिये प्राइवेट स्कूल के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक जागरूक थे।

06. शुक्ला जयश्री (2014) ने 'भौतिक एवं शैक्षिक सुविधाओं के सन्दर्भ में शिक्षा के अधिकार सन् 2009 के क्रियान्वयन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पर अध्ययन किया। उदेश्य के रूप में सरकारी व निजी स्कूलों में भौतिक सुविधाओं के सन्दर्भ में शिक्षा अधिकार कानून के क्रियान्वयन का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में इन्होनें पाया कि सरकारी व निजी दोनों ही स्कूलों में भौतिक सुविधाओं के सन्दर्भ में शिक्षा अधिकार कानून 2009 का क्रियान्वयन नहीं

हो पा रहा हैं, जबकि शैक्षिक सुविधाओं के सन्दर्भ में कुछ सरकारी विद्यालयों में क्रियान्यवन हो पा रहा है।

07. सिंह, आर के (2013)ने अपने अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों में प्रबंधन की स्थिति एवं कार्यरत् शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन में' पाया कि माध्यमिक विद्यालयों में प्रबंध की स्थिति संतोषप्रद नहीं है। विद्यालयों में कक्षा, श्यामपटट् व अन्य भौतिक संसाधनों आदि की गुणवत्ता भी निम्न स्तर की है। शिक्षक अपने कार्य से पूर्णतः संतुष्ट नहीं है। इसका कारण उनका दूरस्थ स्थानों पर नियुक्त होना, अतिरिक्त कार्य प्रदान किया जाना था। माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक एवम् शिक्षिकायें संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के समुचित क्रियान्वयन न होने को लेकर दुश्चिन्ता में नजर आते थे।

अनुसंधान विधि एवं उपकरण :

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता की उत्तरप्रदेश की माध्यमिक शिक्षा की स्थिति एवं उससे जुडे विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में जिज्ञासा थी। अतः समस्या की प्रकृति को देखते हुये शोधार्थी ने प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि की विश्लेषणात्मक शोध प्रक्रिया का अनुसरण किया है।

प्रयुक्त अभिकल्प :

प्रस्तुत समस्या की प्रकृति सर्वेक्षण अनुसंधान विधि के होने के कारण शोध अभिकल्प भी सर्वेक्षण अनुसंधान अभिकल्प के अनुरूप ही चयन किया जाना चाहिये। अतः समस्या की प्रकृति को देखते हुए अध्ययनकर्त्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में दो स्थायी समुह अभिकल्प की क्रिया विधि के प्रयोग का अनुसरण किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ जनपद के सभी माध्यमिक स्तर निजी एवम् सरकारी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षको को जनसंख्या के रूप में चयनित किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि से दस सरकारी विद्यालयों को तथा 10 निजी विद्यालयों को, जो कि माध्यमिक स्तर के विद्यालय थे, चयनित किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत अध्यन में उपकरण के रूप में श्री अमर सिंह व टी0 आर0 शर्मा द्वारा निर्मित्त प्रमाणिक मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

प्रश्नावली का प्रशासन

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्त्ता द्वारा आंकड़ो के संकलन हेतु माध्यमिक स्तर के सरकारी एवम निजी विद्यालयों के माध्यम से सहयोग प्राप्त किया गया। इस सम्बन्ध में विद्यालय प्रशासन के समक्ष अध्ययन की आवश्यकता को रखा गया। सर्वप्रथम सरकारी विद्यालयों के अध्यापको को प्रश्नावली देकर और सम्बन्धित निर्देशों को बताकर आंकडो का एकत्रित किया गया इसी प्रकार सरकारी विद्यालयों के महिला शिक्षकों से आंकड़ों का संकलन किया गया। इसके पश्चात निजी विद्यालयों के अध्यापकों के समक्ष जाकर अपनी अध्ययन आवश्यकता को स्पष्ट किया गया तथा आवश्यक निर्देश दिये गये, तथा निजी विद्यालयों के अध्यापकों से आंकड़ों का संकलन किया।

फलाकंन

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवम् निजी विद्यालयों के महिला एवम् पुरूष अध्यापकों द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुरूप भरी गई प्रश्नावली को एकत्रित करने के उपरान्त प्रत्येक कथनों पर दिये गये मतों के अनुसार संख्या प्राप्त की गई एवं जिस कथन पर जितनी सहमति (✓) लगाई गई उनको उसी संख्या में निर्देशों के अनुरूप प्राप्तांक प्रदान कर फलांकन किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध हेतु उपरोक्त प्रश्नावली द्वारा प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण आंकड़ो की प्रकृति के अनुसार उपयुक्त सांख्यिकी का प्रयोग करके किया जायेगा।

आंकड़ो का विश्लेषण एवम् व्याख्या :

सारणी संख्या 01

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

मध्यमान	N	M	S.D.	D	σ D	C.R.	सार्थकता
महिला शिक्षक (सरकारी विद्यालय)	120	203.2	16.24	7.5	2.05	3.65	0.01′
महिला शिक्षक (निजी विद्यालय)	120	196.15	15.58				

0.01 स्तर पर सार्थक 2.60

उक्त सारणी संख्या 01 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों की ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 203.2 तथा मानक विचलन 16.24 है। जबकि निजी विद्यालयों की ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 196.15 तथा मानक विचलन 15.58 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 3.65 है जो स्वतंत्रता अंश 238 के लिये सार्थकता स्तर 0.01 पर सी आर सारणी मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का मध्यमान, माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकायें निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक संतुष्ट है।माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है।

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का आरेखीय प्रदर्शन निम्नांकित रूप में व्यक्त किया गया है –

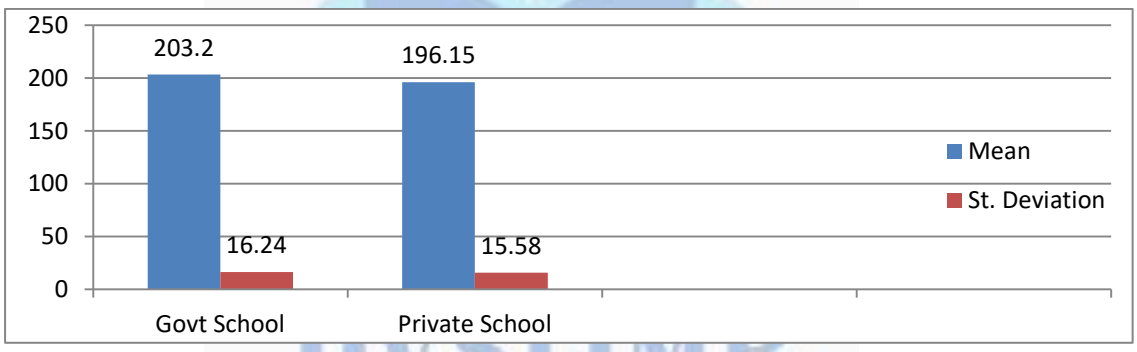

ग्राफीय चित्रण संख्या 01

सारणी संख्या 02

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

मध्यमान	N	M	S.D.	D	σ D	C.R.	सार्थकता
महिला शिक्षक (सरकारी विद्यालय)	**120**	**203.2**	**16.24**	**21.18**	**1.99**	**10.64**	**0.01'**
महिला शिक्षक (निजी विद्यालय)	**120**	**182.02**	**14.56**				

0.01 स्तर पर सार्थक 2.60

उक्त सारणी संख्या 02 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों की शहरी महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 203.2 तथा मानक विचलन 16.24 है। जबकि निजी विद्यालयों की शहरी महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 182.02 तथा मानक विचलन 14.56 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 10.64 है जो स्वतंत्रता अंश 238 के लिये सार्थकता स्तर 0.01 पर सी आर सारणी मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का मध्यमान, माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकायें निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक संतुष्ट है।

माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शहरी शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है। जबकि निजी विद्यालयों में समय से वेतन का प्राप्त न होना, वेतन मान कम होना आदि जैसे कारणों की वजह से यह कहा जा सकता है कि निजी विद्यालयों की शिक्षिकायें अधिक संतुष्ट नहीं हैं।

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की शहरी शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का आरेखीय प्रदर्शन निम्नांकित रूप में व्यक्त किया गया है –

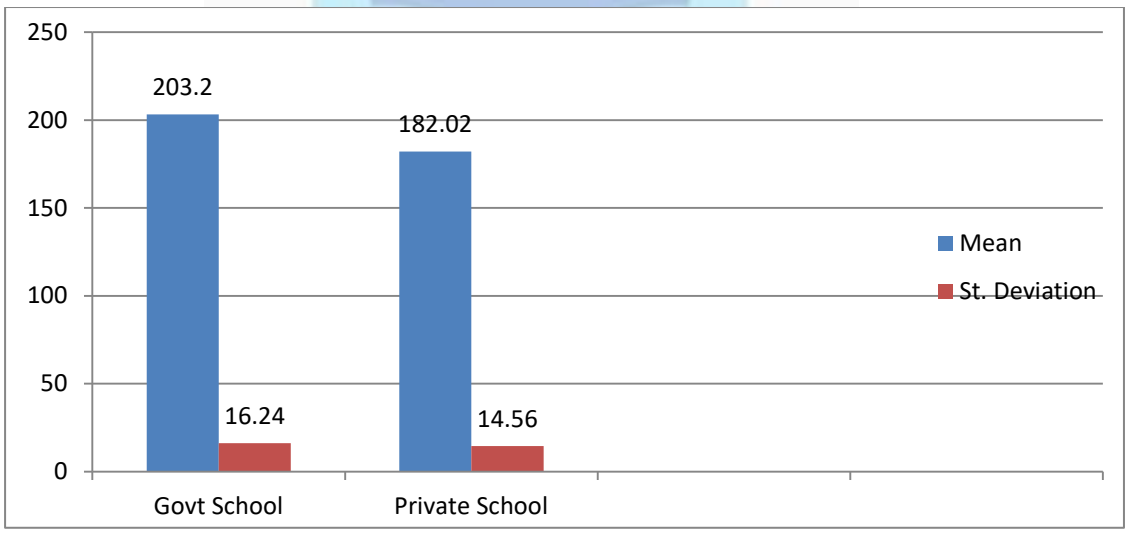

ग्राफीय चित्रण संख्या 02

<u>सारणी संख्या 03</u>

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

मध्यमान	N	M	S.D.	D	σ D	C.R.	सार्थकता
पुरूष शिक्षक (सरकारी विद्यालय)	120	196.15	15.58	7.5	2.05	3.65	0.01′
पुरूष शिक्षक (निजी विद्यालय)	120	182.02	14.56				

0.01 स्तर पर सार्थक 2.60

उक्त सारणी संख्या 03 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 196.15 तथा मानक विचलन 15.58 है। जबकि निजी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 182.02 तथा मानक विचलन 14.56 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 3.65 है जो स्वतंत्रता अंश 238 के लिये सार्थकता स्तर 0.01 पर सी आर सारणी मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षकों से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षक निजी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षकों से अधिक संतुष्ट है।

माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको विद्यालय में प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है। जबकि निजी विद्यालयों में समय से वेतन का प्राप्त न होना, वेतन कम होना, वेतन की वृद्धि न होना, शिक्षकों पर कार्य का अत्यधिक दबाव होना आदि जैसे कारणों की वजह से कहा जा सकता है कि निजी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षक सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकोंकी तुलना में अधिक संतुष्ट नहीं हैं।

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का आरेखीय प्रदर्शन निम्नांकित रूप में व्यक्त किया गया है –

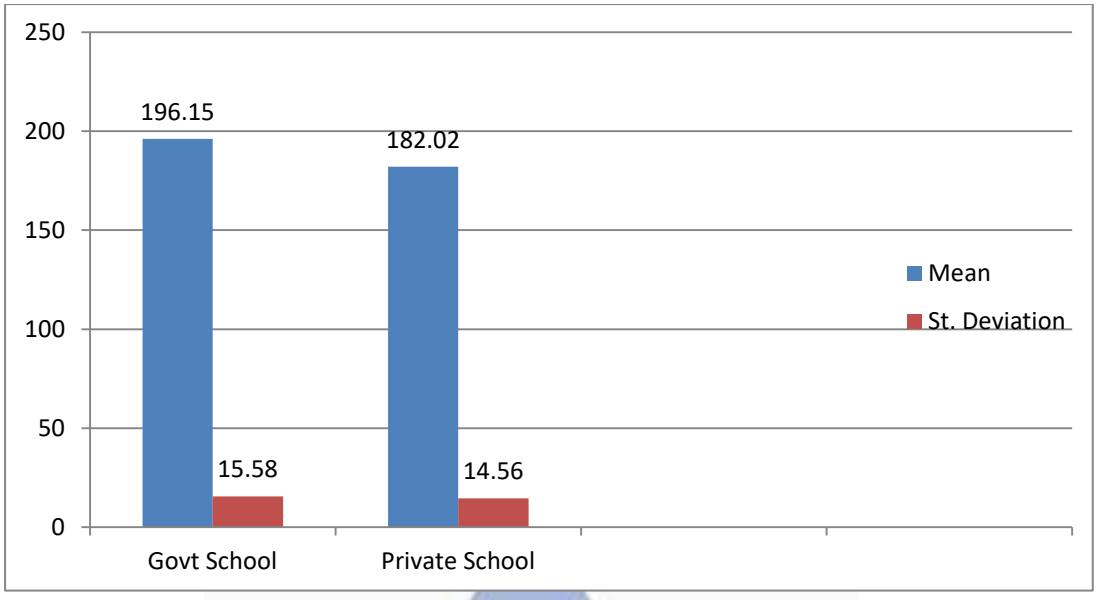

ग्राफीय चित्रण संख्या 03

सारणी संख्या 04

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

मध्यमान	N	M	S.D.	D	σ D	C.R.	सार्थकता
पुरूष शिक्षक (सरकारी विद्यालय)	120	195.24	15.98	1.51	2.70	0.55	0.01'
पुरूष शिक्षक (निजी विद्यालय)	120	193.73	20.04				

0.01 स्तर पर असार्थक 2.61

उक्त सारणी संख्या 04 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 195.24 तथा मानक विचलन 15.98 है। जबकि निजी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 193.73 तथा मानक विचलन 20.04 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 0.55 है जो स्वतंत्रता अंश 178 के लिये सार्थकता स्तर 0.01 पर सी आर सारणी मान 2.61 से कम है जो असार्थक है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों

के शहरी पुरूष शिक्षकों से कम है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षक निजी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों से अधिक संतुष्ट हैं।

माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको विद्यालय में प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है। जबकि निजी विद्यालयों में समय से वेतन का प्राप्त न होना, पुरूषों से कार्य अधिक लिया जाना, वेतन कम होना, वेतन की वृद्धि न होना, विद्यालयों में अध्यापकों का सुसज्जित होकर रहना, जिसके कारण अनावश्यक खर्च बढ़ता है, आदि जैसे कारणों की वजह से कहा जा सकता है कि निजी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षक सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की तुलना में अधिक संतुष्ट नहीं हैं।

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का आरेखीय प्रदर्शन निम्नांकित रूप में व्यक्त किया गया है –

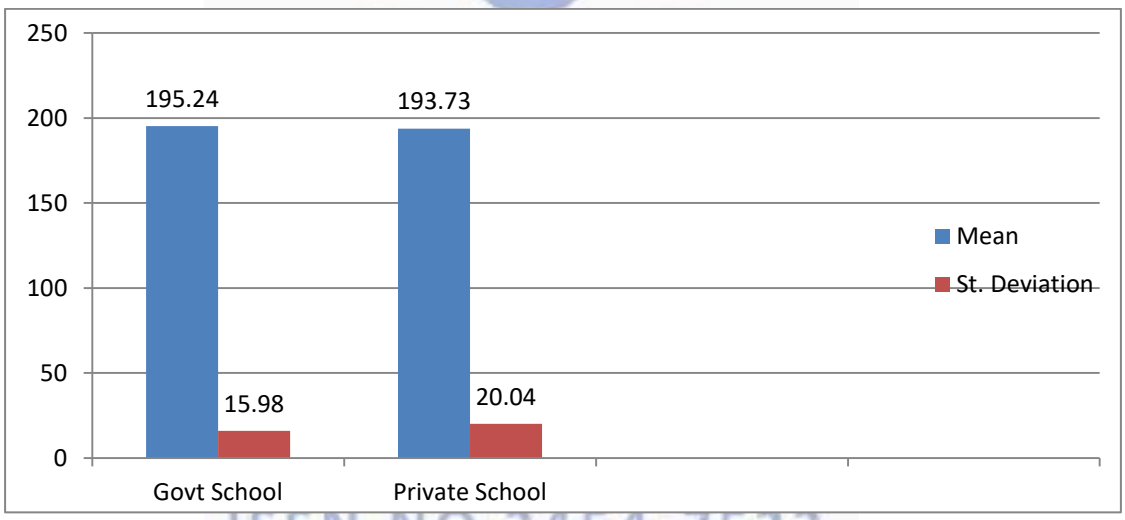

ISSN NO 2454-7522

ग्राफीय चित्रण संख्या 04

निष्कर्ष :

प्रयुक्त अध्ययन का उद्देश्य 'सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन' करना था। अतः उद्देश्यानुसार प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण एवम् विवेचना उपरान्त जो उपलब्धियॉ एवम् निष्कर्ष प्राप्त हुये है, उन्हें निम्न प्रकार प्रदृशित किया गया है –

सारणी संख्या 01

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

उक्त सारणी संख्या 01 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों की ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 203.2 तथा मानक विचलन 16.24 है। जबकि निजी विद्यालयों की ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 196.15 तथा मानक विचलन 15.58 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 3.65 है जो स्वतंत्रता अंश 238 के लिये सार्थकता स्तर 0.01 पर सी आर सारणी मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का मध्यमान, माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकायें निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक संतुष्ट है।माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है।

सारणी संख्या 02

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

उक्त सारणी संख्या 02 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों की शहरी महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 203.2 तथा मानक विचलन 16.24 है। जबकि निजी विद्यालयों की शहरी महिला शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 182.02 तथा मानक विचलन 14.56 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 10.64 है जो स्वतंत्रता अंश 238 के लिये सार्थकता स्तर 0.01 पर सी आर सारणी मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का मध्यमान, माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकायें निजी विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक संतुष्ट है।माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की शहरी शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है। जबकि निजी विद्यालयों में समय से वेतन का प्राप्त न होना, वेतन मान कम होना आदि जैसे कारणों की वजह से यह कहा जा सकता है कि निजी विद्यालयों की शिक्षिकायें अधिक संतुष्ट नहीं हैं।

सारणी संख्या 03

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

उक्त सारणी संख्या 03 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 196.15 तथा मानक विचलन 15.58 है। जबकि निजी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 182.02 तथा मानक विचलन 14.56 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 3.65 है जो स्वतंत्रता अंश 238 के लिये सार्थकता स्तर 0.01 पर सी आर सारणी मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षकों से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षक निजी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षकों से अधिक संतुष्ट है।माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको विद्यालय में प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है। जबकि निजी विद्यालयों में समय से वेतन का प्राप्त न होना, वेतन कम होना, वेतन की वृद्धि न होना, शिक्षकों पर कार्य का अत्यधिक दबाव होना आदि जैसे कारणों की वजह से कहा जा सकता है कि निजी विद्यालयों केग्रामीण पुरूष शिक्षक सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकोंकी तुलना में अधिक संतुष्ट नहीं हैं।

सारणी संख्या 04

सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

उक्त सारणी संख्या 04 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सरकारी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 195.24 तथा मानक विचलन 15.98 है। जबकि निजी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 193.73 तथा मानक विचलन 20.04 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 0.55 है जो स्वतंत्रता अंश 178 के लिये सार्थकता स्तर 0.01 पर सी आर सारणी मान 2.61 से कम है जो असार्थक है। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों से कम है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षक निजी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों से अधिक संतुष्ट हैं।माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के अधिक होने का संभावित कारण, उनको विद्यालय में प्रदान की जाने वाली सुविधायें, वेतन का समय से प्राप्त हो जाना, वेतन प्राप्त होने की निश्चितता, देयकों का समय पर होने वाला भुगतान जैसे कारणों की वजह से हो सकता है। जबकि निजी विद्यालयों में समय से वेतन का प्राप्त न होना, पुरूषों से कार्य अधिक

लिया जाना, वेतन कम होना, वेतन की वृद्धि न होना, विद्यालयों में अध्यापकों का सुसज्जित होकर रहना, जिसके कारण अनावश्यक खर्च बढ़ता है, आदि जैसे कारणों की वजह से कहा जा सकता है कि निजी विद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षक सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की तुलना में अधिक संतुष्ट नहीं हैं।

शैक्षिक निहितार्थ :

शोध कार्य की महत्ता उसके शैक्षिक निहितार्थों से ही प्रमाणित होती है। कोई भी शोधकर्त्ता उसके द्वारा किये गये शोध अध्ययन की आवश्यकताओं, उपलब्धताओं एवम् महसुस की गई कमियों का विवेचन जितनी अधिक सुक्ष्मता से करने में सफल होता है वही उसका शैक्षिक निहितार्थ कहलाता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से शैक्षिक जगत, समाज एवम् राष्ट्र का जितना अधिक सरोकार होगा तथा वह राष्ट्रीय, सामाजिक तथा शैक्षिक प्रगति एवम् गुणवत्ता में जितना अधिक सहायक होगा वही इसका शैक्षिक निहितार्थ कहलायेगा।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा लिये गये विषय 'सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन' से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्न निहितार्थ निकाले जा सकते हैं –

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् सरकारी एवम् निजी विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के सम्बन्ध में समुचित जानकारी प्राप्त करके इसके निदान हेतु प्रयास किया जा सकता है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवम् शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में भी शहरी क्षेत्रों के समकक्ष व्यवस्था स्थापित की जा सकती है।
3. विभिन्न वर्गों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा शिक्षकों के सम्बन्ध में उनकी समस्याओं का समुचित निदान कर उनकी व्यवसायिक संतुष्टि में वृद्धि की जा सकती है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को जानकर इस स्तर के पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक सुधार हेतु प्रयास किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा माध्यमिक शिक्षकों की स्थिति एवम समस्याओं से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिल सकती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. https://hindi.oneindia.com/dictionary/job-satisfaction
2. https://www.businessnewsdaily.com/10092-encourage-professional-development.html
3. https://positivepsychology.com/job-satisfaction
4. https://www.gigapromo.in/ws?q=employee%20satisfaction
5. *Hil, macgra*.safal team kaise banaye. North America: McGraw Hill Education, 2005.

6. *Nath, narendra*.my idea of education. India: Advaita Ashram India, 2010.
7. ***Crow and Crow (1962)***, Child Development and Adjustment, New York: MacMillan Company
8. ***Megan, B. (1999),*** Feeling Power: Emotions and Education. Routedge (UK): Personhood
9. ***Sivakumar, R. (2010),*** A study on attitude towards democracy in relation to social and Emotional maturity. Ph.D, Thesis, Annamalai University

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522